

डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 21, एक वफादार चर्च के लिए प्रार्थना, इफिसियों 1:15-23

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपनी व्याख्यान श्रृंखला में हैं। यह सत्र 21 है, एक वफादार चर्च के लिए प्रार्थना, इफिसियों 1:15-23।

इफिसियों पर बाइबिल अध्ययन व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

हमने पृष्ठभूमि को देखा है और अध्याय 1 के कुछ हिस्सों को कवर किया है। अब, हम इफिसियों के अध्याय 1 के दूसरे भाग की ओर बढ़ते हैं। मैं बस उम्मीद करता हूँ कि जब हम इसे पढ़ेंगे, तो आप कोई पाठ या नया नियम उठाएँगे, या अगर आपकी बाइबल एक अध्ययन बाइबल है, तो बस इसे अपने सामने खोलें ताकि जब मैं पढ़ूँ, तो अगर आपके पास कोई अलग अनुवाद है, तो आप अनुवाद को देख सकें क्योंकि हम अलग-अलग मुद्दों को संबोधित करते हैं। हमेशा की तरह, मैं आपका दिमाग हिलाना चाहता हूँ, तो चलिए इस बारे में सोचते हैं।

इफिसियों के अध्याय 1 की आयत में प्रार्थना को देखते हुए आप क्या सोचते हैं? इफिसियों के अध्याय 1 की आयत 15 से 23 में प्रार्थना को देखते हुए आप क्या सोचते हैं? आपको क्या लगता है कि पौलुस को कलीसिया के लिए प्रार्थना करने के लिए किस बात ने प्रेरित किया? शायद यही वह बात है जिसे आप अपने अंश पर नज़र डालना चाहते हैं और सोचना चाहते हैं कि आपके विचार से क्या हो रहा है। पौलुस ने कलीसिया के बारे में कौन सी खास बातें सुनीं जिससे उसे प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया? जिस गुण का वह उल्लेख करता है, वह किस हद तक उन विश्वासियों में स्पष्ट है जिन्हें आप आज भी जानते हैं? जैसा कि हमने अध्याय 1 के आरंभिक भाग में बताया था कि पौलुस ने यह बेदम प्रार्थना की थी। परमेश्वर धन्य है, जिसने हमें हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्वाद दिया है, और उसने वास्तव में दिखाया कि परमेश्वर ने इस कलीसिया के लिए क्या किया है।

लेकिन यहाँ, वह उस धन्यवाद और उस आह्वान से आगे बढ़ता है और फिर इस संबंध में प्रार्थना को संबोधित करने के लिए वास्तव में दिखाने या प्रार्थना शुरू करने के लिए आगे बढ़ता है। जैसा कि आप इन व्याख्यानों का अनुसरण करते हैं, मैंने जानबूझकर आपको उन चीजों के बारे में याद दिलाने की कोशिश की है जिनके बारे में हम अक्सर पॉल में बात नहीं करते हैं और जिनके बारे में आपको सोचना चाहिए - पॉल का प्रार्थना जीवन।

ध्यान दें कि यह पद 15 में कैसे लिखा गया है। इस कारण से, क्योंकि मैंने प्रभु यीशु मसीह में आपके विश्वास और सभी संतों के प्रति आपके प्रेम के बारे में सुना है, मैं आपके लिए धन्यवाद देना नहीं छोड़ता, अपनी प्रार्थनाओं में आपको याद करता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर, महिमा का पिता, आपको उसके ज्ञान में ज्ञान और प्रकाशन की आत्मा दे सकता है, आपके हृदय की आंखें ज्योतिर्मय हो सकती हैं, कि आप जान सकें कि वह आशा क्या है जिसके लिए उसने आपको बुलाया है, संतों में उसकी महिमामय विरासत का धन क्या है, और हमारे प्रति

उनकी सामर्थ्य की अपार महानता क्या है जो विश्वास करते हैं, उनकी महान शक्ति के कार्यों के अनुसार, जो उन्होंने मसीह में काम किया, जब उन्होंने उन्हें मृतकों में से उठाया, और उन्हें स्वर्गीय स्थानों में दाहिने हाथ पर बैठाया, सभी शासन और अधिकार और शक्ति और प्रभुत्व के ऊपर, और हर नाम के ऊपर जो न केवल इस युग में, बल्कि आने वाले युग में भी लिया जाएगा। पॉल लिखता है, मैं आपके लिए प्रार्थना करना बंद नहीं करता।

यदि पौलुस अतिशयोक्ति नहीं कर रहा है, और वह वास्तव में उन कलीसियाओं के लिए प्रार्थना कर रहा है, जिन्हें वह लिखता है, तो अकेले जेल के पत्रों में भी, आप वास्तव में देख सकते हैं कि वह कितनी बार कलीसिया के लिए प्रार्थना करता है, और वह उल्लेख करता है कि वह हमेशा प्रार्थना करता है। कुलुस्सियों में, उसने कहा कि उसने प्रभु यीशु मसीह में उनके विश्वास और संतों के प्रति उनके प्रेम के बारे में सुना था। यह उसे उनके लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

फिलेमोन में, उन्होंने कहा कि उन्होंने फिलेमोन के यीशु मसीह में विश्वास और सभी लोगों के लिए उनके प्रेम के बारे में सुना है, और यह उन्हें प्रार्थना में रखने के लिए प्रोत्साहित करता है। यहाँ, वे कहते हैं, जब से उन्होंने प्रभु यीशु मसीह में उनके विश्वास और संतों के लिए उनके प्रेम के बारे में सुना है, पैटर्न को देखें; उन्होंने रोका नहीं है; उन्होंने उनके लिए प्रार्थना करना बंद नहीं किया है। यह एक ऐसे नेता की भावना है जिसने इन ईसाइयों के समान ही संदर्भ में दो से तीन वर्षों तक काम किया है, उनके सामने आने वाली चुनौतियों और संदर्भ को समझते हुए, और एक नेता जो चर्च के लिए प्रार्थना करने का बीड़ा उठाता है।

उसने सुना। आइए इस प्रार्थना के अवसर पर थोड़ा नज़र डालें। शायद इससे हमें मदद मिलेगी।

पौलुस ने जो सुना था, उसके कारण प्रार्थना प्रेरित हुई। याद रखें, उसने देखा नहीं था, उसने सुना था, और जब उसने यह सुना, तो उसने इस पर विश्वास किया क्योंकि उसने कलीसिया को मसीह यीशु में विश्वासयोग्य, भरोसेमंद, मसीह यीशु में विश्वसनीय लोगों के रूप में पेश किया था। इसलिए जब उसने उनके बारे में सुना, तो वह जानता था कि यह सच था।

उसने प्रभु यीशु मसीह में उनके विश्वास के बारे में सुना। यह शब्द प्रभु यीशु मसीह में उनके भरोसे का अनुवाद कर सकता है। जब हम विश्वास शब्द का उपयोग करते हैं, तो कभी-कभी हम विश्वास शब्द के अर्थ और सार को अनदेखा कर देते हैं।

नए नियम के संदर्भ में आस्था, उच्चारण और भरोसा है। यह केवल बौद्धिक रूप से विश्वास करना नहीं है कि कुछ सत्य है। यह बौद्धिक रूप से विश्वास करना है कि कुछ सत्य है, इस हद तक कि कोई व्यक्ति अपने जीवन को उस पर सौंपने में सक्षम है जिस पर उसने विश्वास किया है, या कोई व्यक्ति बिना किसी शर्त के उस पर प्रतिबद्ध होने के लिए तैयार है जिस पर उसने बौद्धिक रूप से विश्वास किया है।

जब मैं सेमिनरी में था, तो मेरे एक प्रोफेसर ने एक उदाहरण दिया। यह एक अच्छा उदाहरण नहीं है, खासकर जब हम इफिसियों से निपट रहे हों, लेकिन यह नए नियम में विश्वास की अवधारणा को समझाने में मदद करता है। और उन्होंने इसे इस तरह से बताया।

यह ऐसा है जैसे कोई जादूगर आता है, एक बड़ी गाय उठाता है, भीड़ के सामने गाय का सिर काट देता है। खून बहते हुए वह गाय का सिर एक तरफ रखता है, और गाय का बाकी शरीर दूसरी तरफ रखता है। और जादूगर जादू करके कहता है, रुको और देखो क्या होता है। वह कहता है, अरे गाय, सिर, आकर शरीर के बाकी हिस्से से चिपक जाओ। और फिर गाय का सिर उस कोने से उछलकर अंदर आता है, गाय की गर्दन से चिपक जाता है, दूसरी तरफ शव होता है। गाय उठती है और चली जाती है, अगर वह जादूगर पूछे, अगर मैं किसी को मार दूँ, तो क्या मैं उस व्यक्ति को वापस जीवित कर सकता हूँ? संभावना है कि कुछ लोग कहेंगे, ओह हाँ, उसने जीवन लिया और उसे वापस लाया।

अगर कोई यह मानता है कि अगर वह किसी की जान ले ले या उसी तरह से किसी का सिर काट दे, तो वह उस व्यक्ति को वापस जीवित कर सकता है, तो वह व्यक्ति जादूगर पर विश्वास करता है। नए नियम के अर्थ में, यह आरोहण है, विश्वास का बौद्धिक मार्ग है। हालाँकि, दूसरा मार्ग यह है।

यदि जादूगर ने पूछा कि व्यक्ति को मारने के लिए कौन आगे आएगा, तो सिर को एक तरफ रखें, शरीर के बाकी हिस्सों को उस तरफ रखें, वही अनुष्ठान करें, और सिर को शरीर के बाकी हिस्सों पर उछाल दें और व्यक्ति को उठने दें और कहें, हाँ, कौन आगे आएगा? जो व्यक्ति जादूगर को मारने के लिए आगे आने के लिए तैयार है, वह जादूगर पर भरोसा करता है। विश्वास की नई नियम की समझ में, वे दो घटक महत्वपूर्ण हैं। अब, हाँ, मैंने अभी आपको जो जादूगर का दृष्टांत दिया है, उसके प्रकाश में, कुछ लोग कह सकते हैं कि हम मानते हैं कि वह जीवन ले सकता है और उसे वापस ला सकता है, लेकिन मैं आगे बढ़कर उस जादूगर से यह नहीं कहूँगा कि वह मुझे मार डाले और मुझे वापस जीवन दे।

इसका मतलब है कि मुझे उस जादूगर पर विश्वास नहीं है। लेकिन अगर आप मानते हैं कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरा, उसने आपको चुना, उसने आपको छुड़ाया, और उसने आपको बौद्धिक रूप से मुहरबंद कर दिया। जिस विश्वास के बारे में पॉल ने सुना है, वह इस चर्च का विश्वास है जो कहता है कि वे न केवल बौद्धिक रूप से विश्वास करते हैं, बल्कि उन्होंने अपना पूरा जीवन प्रभु यीशु मसीह की देखभाल में सौंप दिया है।

उसने प्रभु यीशु मसीह में उनके विश्वास, उनके प्रति उनके भरोसे और उनके हाथों में अपना जीवन सौंपने की उनकी तत्परता के बारे में सुना, और उसने संतों के प्रति उनके प्रेम के बारे में भी सुना। रिश्ते के संदर्भ में, एक दूसरे से प्रेम करने की उनकी तत्परता और इच्छा। शायद मुझे यह कहने के लिए रुकना चाहिए कि यह एक ऐसा चर्च है जहाँ पॉल एकता के बारे में बात करने जा रहा है।

एकता के लिए एक प्रमुख तत्व प्रेम है। ईसाई धर्म में प्रेम की समझ में वह प्रेम है जो किसी भी चीज़ को रोक कर नहीं रखता। प्रेम किसी स्थिति या किसी की स्थिति या किसी के रक्त संबंध या

किसी के जनजातीय संबंध पर आधारित नहीं है, बल्कि वह प्रेम है जो सभी तक पहुँचने के लिए पर्याप्त बड़ा है।

पौलुस ने कहा, जब से मैंने प्रभु यीशु मसीह में तुम्हारे विश्वास और संतों के प्रति तुम्हारे प्रेम के बारे में सुना है, तब से मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हुए धन्यवाद देना बंद नहीं कर रहा हूँ। वाह, यह मुझे कुछ ऐसा याद दिलाता है जिस पर मुझे आपका ध्यान आकर्षित करना चाहिए क्योंकि मैं इफिसियों पर अध्ययन के दौरान आपको थोड़ा-थोड़ा करके दिखाने के लिए रुक नहीं पाऊँगा, लेकिन यहाँ जिस शब्द प्रेम का उल्लेख किया गया है, वह इस पत्र में एक विषय के रूप में कई बार आता है। मैं आपको उन्हें देखने के लिए अपना समय लेने के लिए प्रोत्साहित करूँगा।

कभी-कभी, मैंने कहा है कि यदि आप जिस बाइबल का उपयोग कर रहे हैं वह आपकी है, तो इनमें से कुछ शब्दों को एक विशिष्ट रंग से रेखांकित करें और उस रंग का उपयोग उस विशेष शब्द की उपस्थिति से मेल खाने के लिए करें। आप प्रेम के मामले में देखेंगे, आप वास्तव में पाएंगे कि संतों के लिए प्रेम विषय विकसित होगा, और आप देखेंगे कि पॉल वास्तव में परमेश्वर के प्रेम को छू रहा है।

अध्याय 2, पद 4, अध्याय 3, पद 17, और अध्याय 6, पद 23 में विश्वासियों के लिए। आप यह भी देखेंगे कि वह अध्याय 3, पद 19 में विश्वासियों के लिए मसीह के प्रेम को भी संबोधित करेगा।

वह अध्याय 6, श्लोक 24 में मसीह के प्रति विश्वासी के प्रेम पर भी बात करेंगे, और फिर आप देखेंगे कि वह मसीह यीशु के अनुयायियों के बीच स्पष्ट होने वाले रिश्ते के बारे में बात करने के लिए कितनी बार प्रेम शब्द का उपयोग करते हैं। प्रेम ही वह है जिसने परमेश्वर को अपने बेटे को उस बड़ी कीमत का भुगतान करने के लिए भेजने के लिए प्रेरित किया जिसका मैंने पिछले व्याख्यानों में उल्लेख किया था। मुझे लगता है कि आपको वह उद्घरण याद होगा।

मुझे वह प्रसिद्ध उद्घरण याद है। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। यूहन्ना 3:16.

हाँ, लेकिन 1 यूहन्ना 3:16 में भी यही कहा गया है, क्योंकि हम प्रेम के बारे में बात करते हैं। यह प्रेम है कि एक व्यक्ति अपने मित्रों के लिए अपना जीवन दे देता है। पौलुस ने कहा कि मैंने तुम्हारे विश्वास और संतों के प्रति तुम्हारे प्रेम के बारे में सुना है।

इस पत्र में प्रेम विषय को विकसित किया जाएगा, और यह दिखाया जाएगा कि कैसे प्रेम, सच्चा प्रेम, एकजुटता लाने में मदद कर सकता है या जिसे मैं कभी-कभी आस्था के समुदाय के भीतर आंतरिक सामंजस्य कहता हूँ। मुझे रुककर एक सवाल पूछने दें। इस समय तक, आप शायद सोच रहे होंगे कि यह आदमी मुझसे तरह-तरह के सवाल क्यों पूछना पसंद करता है। हाँ, मुझे अच्छा लगता है कि हम साथ मिलकर सोचें, और मैं वास्तव में चाहता हूँ कि हम शारीरिक रूप से भी कक्षा में एक साथ हों। तो, आइए यह प्रश्न पूछें। पौलुस चर्च के लिए किन

चीजों या क्षेत्रों के लिए प्रार्थना करता है और आपको क्यों लगता है कि ये दुनिया में कई चुनौतियों के साथ विश्वासियों के रूप में स्थिति के लिए आवश्यक हैं? इसके बारे में सोचें।

बस एक पल के लिए रुकें और उन क्षेत्रों के बारे में सोचें जिन्हें पौलुस सामने लाएगा। पद 16 को देखते हुए, आप देखेंगे कि पौलुस कलीसिया के लिए एक याचिका से शुरू करता है। कलीसिया के लिए इस याचिका में, वह दो मुख्य क्षेत्रों पर प्रकाश डालता है।

इस पैराग्राफ़ को ठीक करें

वह प्रकाश के लिए प्रार्थना करता है, और वह ज्ञान के लिए प्रार्थना करता है। तो आइए हम अपने मन को तरोताजा करने के लिए पद 16 से 19 ए को देखें ताकि हम समझ सकें कि पद 16 में प्रकाश के लिए प्रार्थना के बारे में पौलुस ने क्या कहा है।

मैं तुम्हारे लिए धन्यवाद देना नहीं छोड़ता, अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर, जो महिमा का पिता है, तुम्हें उसमें बुद्धि और प्रकाशन की आत्मा दे। तुम्हारे हृदय की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान सको कि वह आशा क्या है जिसके लिए उसने तुम्हें बुलाया है, और पवित्र लोगों में उसकी महिमामय विरासत का धन क्या है।

मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूँ कि अगर आपके बच्चे इसे देख रहे हैं तो यहाँ मेरे कुछ चित्र थोड़े डरावने होंगे। शायद किसी समय, आप उन्हें कुछ मिनटों में हटा दें क्योंकि मैं आपको दिखाऊँगा। मैं इसे जितना संभव हो सके उतना स्पष्ट बनाना चाहता हूँ ताकि आप इसे समझ सकें: चर्च के लिए पॉल की प्रार्थना में प्रकाश के लिए प्रार्थना और प्रकाश के लिए प्रार्थना जिसे वह छूता है, विशेष रूप से प्रार्थना करता है कि परमेश्वर उन्हें उसे जानने के लिए ज्ञान और बुद्धि की आत्मा दे।

पॉल चाहता था कि वे उस ज्ञान को प्राप्त करने में सक्षम हों क्योंकि ज्ञान शक्ति है। ज्ञान की कमी के कारण, लोग नष्ट हो जाते हैं, और ज्ञान की कमी के कारण, लोग भय में रहते हैं। कल्पना कीजिए कि आपके बेडरूम में उस लकड़ी के फर्श के नीचे एक बड़ा खजाना छिपा हुआ है जो अच्छी तरह से पॉलिश किया गया है और स्थिर है क्योंकि आपको नहीं पता कि वहाँ क्या छिपा है।

आप ज्ञान की कमी के कारण अपने ऊपर लिए गए कर्ज के बारे में चिंता कर रहे हैं और उदास हो रहे हैं। आपको यह न जानते हुए सिरदर्द हो सकता है कि आप क्या खाकर सो रहे हैं। पॉल प्रार्थना करता है कि उन्हें यह ज्ञान हो कि उनके पास क्या है क्योंकि इससे फर्क पड़ना चाहिए।

और वह प्रार्थना करता है कि ज्ञान की खोज में, मसीह को जानने के लिए ज्ञान और बुद्धि की भावना की तलाश में, उनकी आँखें, हृदय की आँखें खुली रहें। और यहाँ मुझे यह कहने के लिए रुकना चाहिए कि अपने अनुवाद को थोड़ा सा जाँचें क्योंकि कुछ अनुवाद नहीं जानते कि आपके हृदय की आँखों में इस अजीब अभिव्यक्ति को कैसे संभालना है। इसलिए, वे कहते हैं आपके हृदय की आँखें।

हालाँकि, ग्रीक में, यह आपके दिल की एकवचन का बहुवचन है। अजीब अभिव्यक्ति है न? बच्चों को बाहर निकालो, और मैं तुम्हें उदाहरण देता हूँ। कल्पना करो, कल्पना करो कि पौलुस तुम्हारे दिल की आँखों के बारे में क्या कहना चाह रहा है।

आपके पास हृदय है, और हृदय से आँखें निकलती हैं।

मेरे कुछ छात्र कहते हैं कि यह डरावना है। इसलिए, मैं नहीं चाहता कि आप सभी प्रकार के सपने देखें, भले ही मैं आपको प्रभु में मजबूत और दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित कर रहा हूँ। आइए देखें कि पॉल यहाँ किस भाषा का उपयोग करता है और उसकी दुनिया में दिल का क्या मतलब है।

हृदय वस्तुतः एक शारीरिक अंग है, लेकिन इस शब्द का प्रयोग नैतिक तर्क या बौद्धिक जीवन के स्थान को संदर्भित करने के लिए रूपक के रूप में किया जाता है। हृदय भावनाओं, भावनाओं या इच्छाशक्ति का स्थान है। बाइबल में हृदय शब्द के उपयोग के संदर्भ में, कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग भावनाओं या भावनाओं के स्थान को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जैसा कि हम व्यवस्थाविवरण 28:47 या भजन 34 पद 18 में पाते हैं।

कभी-कभी, जब बाइबल की परीक्षा में हृदय शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो इसका तात्पर्य ईश्वर या ईश्वर के निवास स्थान से होता है, एक ऐसा स्थान जहाँ ईश्वर हृदय में निवास करता है। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति ईश्वर को अपने अंतरतम में रहने देता है, और हृदय शब्द का प्रयोग इसे व्यक्त करने के लिए किया जाता है। कभी-कभी, इसका प्रयोग धार्मिक या नैतिक आचरण के स्थान, हृदय को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जहाँ से नैतिकता और नैतिक सिद्धांत निकलते हैं और वास्तविक जीवन में खुद को अभिव्यक्त करते हैं।

तो क्या यह संभव है कि पौलुस यह प्रार्थना करने के बारे में सोच रहा है कि परमेश्वर इन विश्वासियों के दिलों को, इन विश्वासियों के दिलों की आँखों को प्रकाशित करे ताकि वे उच्च स्तर की रोशनी, प्रोत्साहन पा सकें, और उनके अस्तित्व और भावनाओं की पूरी भावना प्रकाश से भरी हो? उदाहरण के लिए, हमारे पास प्राचीन ग्रंथ हैं जो दिखाते हैं कि जब इनमें से कुछ संदर्भों का धार्मिक मंडलियों में उपयोग किया जाता है, तो लोग ऐसी बातें कहेंगे, कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें आप अपनी आँखों से नहीं देख सकते हैं, लेकिन आप अपने दिल से कुछ आध्यात्मिक चीजें देख सकते हैं। कुछ लोग वास्तव में कुछ आध्यात्मिक चीजों को समझने की क्षमता के बारे में बात करेंगे, भौतिक आँखों से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक आँखों या दिल से।

यही कारण है कि मैं और कुछ अन्य विद्वान यह कहने की संभावना रखते हैं कि पॉल प्रार्थना कर रहा है कि उनकी भावनाओं का केंद्र, उनका नैतिक जीवन इतना प्रबुद्ध और इतना हल्का हो जाए कि वे मसीह में मौजूद अच्छी चीजों को देख और समझ सकें। यदि ऐसा है, तो पॉल प्रार्थना कर रहा है कि कोई भी अंधकार जो उनकी भावनाओं के केंद्र को खा जाएगा, कोई भी अंधकार जो नैतिक व्यवहार को प्रेरित करेगा जो अंधकारमय जीवन की ओर ले जाएगा, वह परास्त हो जाए क्योंकि ईश्वर की आत्मा उनके दिलों की आँखों को प्रबुद्ध करती है और उन्हें चीजों को देखने की क्षमता देती है जैसा कि मसीह उन्हें देखना चाहता है। वह चर्च से रोशनी के लिए प्रार्थना करता है।

चर्च के लिए याचिका की दूसरी बात ज्ञान के लिए है ताकि वे जान सकें, वह प्रार्थना करता है, उनके बुलावे की आशा। पॉल के लिए, आशा अभी भी है, फिर से; मैं इसे यहाँ कहूँगा: यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसके बारे में आप निश्चित नहीं हैं। यह ऐसी चीज़ है जो मूर्त है, जिसे आप समझ सकते हैं।

ताकि परमेश्वर उनकी आँखें, उनके हृदय की आँखें खोल दे, ताकि वे निश्चितता के साथ जान सकें कि उनके बुलावे की आशा क्या है, जिसके लिए उन्हें बुलाया गया है, उस विरासत की आशा जिसके बारे में हम श्लोक 13, 14 और 15 में पढ़ते हैं। ताकि वे जान सकें, वह प्रार्थना करता है, धन। मुझे प्लूटस शब्द पसंद है।

मुझे यह शब्द इसलिए पसंद है क्योंकि पापों में उसकी महिमामय विरासत का धन शब्द इफिसियों में कई बार आता है। धन, मेरा मतलब है, पापों के लिए उसकी महिमामय विरासत, प्रचुर मात्रा में है। परमेश्वर के पास सीमित गोदाम नहीं है।

वह प्रार्थना करता है कि विश्वासियों को पता चले कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या रखा है। क्योंकि अगर उन्हें पता चल जाए कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या रखा है, तो वे अपने आस-पास की छोटी-छोटी चीज़ों से ईर्ष्या या आकर्षण महसूस नहीं करेंगे।

वे जानेंगे कि वे एक महान परमेश्वर की सेवा करते हैं जिसके पास उनके लिए महान संसाधन हैं। और वे एक ऐसे प्रकाश में रहना शुरू करेंगे जहाँ अंधकार उनके दिल या उनकी भावनाओं पर कब्ज़ा करना बंद कर देगा। जहाँ उनका जीवन अब अंधकार से भरा नहीं रहेगा, बल्कि वे परमेश्वर की महिमा के लिए जीने के लिए प्रबुद्ध होंगे, ज्ञान के लिए प्रार्थना करेंगे।

वह यह भी प्रार्थना करता है कि वे परमेश्वर की शक्ति की महानता को जानें। ओह हाँ, यह मेरी पसंदीदा में से एक है कि वे परमेश्वर की शक्ति की महानता को जानेंगे।

और जब वह कहता है कि वे परमेश्वर की शक्ति की महानता को जान सकें, तो वह कहता है कि वह प्रार्थना करता है कि वे परमेश्वर की शक्ति की महानता को जान सकें। वही शक्ति जो मसीह यीशु में काम कर रही थी। दूसरे शब्दों में, यह समानता का मामला है।

यह कहना कि, काश वे परमेश्वर की शक्ति की महानता को जान पाते। वह शक्ति जो मसीह यीशु में काम कर रही है। वह शक्ति जो उनके लिए भी सुलभ है।

तब उन्हें एहसास होगा कि जब आप आध्यात्मिक शक्तियों और उस सब के बारे में बात कर रहे हैं, तो कुछ भी तुलना नहीं कर सकता। लेकिन क्योंकि वे नहीं जानते, वे इस डर में रह सकते हैं कि ये सभी बुतपरस्त देवता उन पर क्या फेंक देंगे। उनके दरवाज़े पर कौन सा जादू या ज्योतिष जाएगा।

और देखिए इसे कैसे रखा गया है। आइए इसे श्लोक 20 से पढ़ें। मुझे यह बहुत पसंद है।

परमेश्वर ने इस सामर्थ्य को मसीह में कार्य करने के लिए दिया। जब उसने उसे मृतकों में से जिलाया। और उसे स्वर्गीय स्थानों में अपने दाहिने हाथ पर बैठाया।

आप देखिए जब यह शक्ति काम कर रही थी, तो मसीह के साथ भी यही हुआ। उसने उसे सभी नियमों, अधिकारों, शक्ति और प्रभुत्व से बहुत ऊपर रखा। और हर नाम से भी ऊपर रखा।

न केवल इस युग में, बल्कि आने वाले युग में भी। और उसने सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया है। और उसे कलीसिया के लिए सब चीजों पर मुखिया बनाया है।

जो उसका शरीर है। उसकी परिपूर्णता जो सब में सब कुछ भर देती है। वाह।

वाह! ताकि वे परमेश्वर की सामर्थ्य की महानता को जान सकें। और यह वही सामर्थ्य है जो मसीह यीशु में कार्य कर रही थी।

वह क्या करने की कोशिश कर रहा है? वह उन्हें यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि अगर वे ईश्वर की शक्ति के बारे में सोचते हैं। तो उन्हें इसके बारे में अमूर्त शब्दों में नहीं सोचना चाहिए। क्योंकि ईश्वर की शक्ति ऐसी ही दिखती है।

और वह इन आयतों में दिखाता है कि शक्ति कैसी दिखती है। इससे पहले कि मैं इसके बारे में विस्तार से बताऊँ, मुझे माफ़ करें।

जब हम ईश्वर की शक्ति वाले भाग तक पहुंचते हैं तो मेरे अंदर का अफ्रीकी शांत हो जाता है, क्योंकि मैंने अपने महाद्वीप के क्षेत्रों में सेवा और मंत्रीत्व किया है।

जहाँ दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियाँ एक वास्तविक खतरा हैं। लोग मसीह को अपना जीवन देने से डरते हैं। और मैंने यह भी देखा है कि परमेश्वर की शक्ति कितनी प्रबल है।

कुछ बुतपरस्त पादरी हमें बताते हैं कि जब हम तुम लोगों को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करते हैं, तो हम जानते हैं कि तुम्हारे आस-पास कुछ है। हम तुम्हें नुकसान पहुँचाने के लिए आगे नहीं आ सकते।

यह कितनी अच्छी बात है। मुझे यह बहुत अच्छा लगता है। और जब उनमें से कुछ लोग ईसाई बन जाते हैं।

और वे ऐसी कहानियाँ सुनाते हैं कि ईसाइयों को नुकसान पहुँचाने के लिए वे कितनी मेहनत करते हैं। कुछ चर्चों को आध्यात्मिक रूप से नष्ट करने के लिए। और सफल नहीं हो पाते।

क्योंकि जब भी वे कुछ करना चाहते थे, तो वे चर्च की प्रार्थनाओं को देखते थे। यह एक-एक करके चीजों को नष्ट कर रहा था।

और उन्हें सत्ता पसंद है। इसलिए, जब उन्हें लगा कि उनकी शक्ति काम नहीं कर सकती। तो दूसरी शक्ति को नष्ट कर देना चाहिए।

उन्होंने सोचा कि शायद। अगर वे अंदर आएँगे, तो उन्हें भी वह शक्ति मिलेगी। इसलिए, आम तौर पर, वे अपना जीवन मसीह को देते हैं।

और फिर हम उन्हें बताना शुरू करते हैं। हमारे पास खुद की कोई शक्ति नहीं है। शक्ति यीशु मसीह के नाम में है।

काश हम अपनी जान उसे दे देते। वह हमें कोई जादुई शक्ति नहीं देगा जिससे हम घूम सकें और दिखावा कर सकें। वह अपना काम करेगा।

वह अपना ख्याल खुद रखेगा। हम उनसे बस इतना ही कह सकते हैं।

लेकिन जब मैं यह प्रश्न पूछ रहा हूँ तो इस महान शक्ति के बारे में सोचिए। क्या शासकों और अधिकारियों और प्रभुत्वों का उल्लेख दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियों को संदर्भित करता है? यह विद्वानों में चर्चा का विषय है। क्या पॉल के मन में सरकार जैसी राजनीतिक शक्तियाँ हैं? इसलिए, कुछ विद्वान कहेंगे, आप जानते हैं, ये आध्यात्मिक शक्तियों का संदर्भ नहीं हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि ये दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियों के संदर्भ हैं। कुछ कहते हैं कि नहीं; ये राजनीतिक शक्तियों के संदर्भ हैं। हालाँकि, अब अधिकांश विद्वान कहते हैं कि ये आध्यात्मिक शक्तियों के संदर्भ हैं क्योंकि यदि आप इफिसुस और आस-पास के क्षेत्र के संदर्भ को जानते हैं, तो ये आध्यात्मिक शक्तियों के संदर्भ हैं।

लेकिन इससे मैं अपने तीसरे सवाल पर आता हूँ। ग्रीको-रोमन दुनिया में आध्यात्मिक शक्तियों और राजनीतिक शक्तियों के बीच किस हद तक अंतर किया जा सकता है? मुझे लगता है कि यह वह सवाल है जो विद्वान अक्सर नहीं पूछते। और मैं यह कहना चाहूँगा कि हालाँकि इन नामों का संदर्भ बुरी आध्यात्मिक शक्तियों के लिए है, लेकिन इसका मतलब राजनीतिक शक्तियों को बाहर रखना नहीं है।

क्योंकि राजनीतिक नेता हमेशा अपने शासन के लिए आध्यात्मिक समर्थन का उपयोग करते हैं। दूसरे शब्दों में, एक राजनीतिक नेता होने का मतलब कुछ हद तक कथित आध्यात्मिक समर्थन के साथ काम करना भी है। यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि रोमियों के बीच, पहले से ही एक ऐसी व्यवस्था होने जा रही है जहाँ सम्राट भी खुद को भगवान कहलाना या पूजा जाना पसंद करेंगे।

हम इसे शाही पूजा कहते हैं, जो ग्रीको-रोमन दुनिया में आम हो जाएगी, जहाँ उच्च शक्ति और अधिकार वाले लोग सचमुच पूजा जाना चाहते हैं क्योंकि धर्म और संस्कृति का आपस में संबंध है और देवताओं और शक्तियों में उनका विश्वास इस बात से जुड़ा है कि वे समाज के नेताओं के रूप में अपनी भूमिका को अच्छी तरह से निभाने में सक्षम हैं। तो हाँ, मैं कहूँगा कि वे सूचियाँ बुरी

आध्यात्मिक शक्तियों को संदर्भित करती हैं। लेकिन मैं यह भी जोड़ूँगा कि हम ग्रीको-रोमन दुनिया में राजनीतिक शक्तियों को बाहर नहीं रखना चाहेंगे।

एक राजनेता के पास एक ज्योतिषी हो सकता है। वे अपने अच्छे काम के लिए सभी तरह की शक्तियों से सलाह ले सकते हैं। याद रखें, हर बड़े शहर में एक संरक्षक देवता होता है।

इसलिए, यदि आप एक राजनीतिक नेता हैं, तो आप यह भी जानते हैं कि एक आध्यात्मिक शक्ति भी है जो उस पर शासन कर रही है। इसलिए, जब हम इसे बहुत अधिक विद्वत्ता में घसीटने की कोशिश करते हैं, तो यह भेद बहुत दूर तक जा सकता है। हालाँकि, वे शक्तियाँ जो भी हों, यह अच्छी खबर है।

मसीह। मसीह को उनसे ऊपर रखा गया है। उनके पास कोई शक्ति नहीं है।

उनके पास मसीह के शासन को नियंत्रित करने या विफल करने या हस्तक्षेप करने की कोई शक्ति नहीं है और जिनके साथ मसीह अपनी आराधना करता है। उन्हें शांत रहना चाहिए। और पॉल बस प्रार्थना करता है कि चर्च को परमेश्वर की इस शक्ति की महानता का पता चले जो उनके लिए उपलब्ध है।

शायद मुझे इसे इस तरह से और स्पष्ट करना चाहिए। परमेश्वर की शक्ति की महानता के लिए पौलुस की प्रार्थनाओं में, हम सबसे पहले पद 19 को देखते हैं, इसकी विशालता की सीमा। पौलुस कहता है कि यह परमेश्वर की शक्ति की असाधारण महानता है।

सिर्फ महानता ही नहीं बल्कि परमेश्वर की शक्ति की असाधारण महानता। और परमेश्वर की यह शक्ति पद 20 से 23 में इस तरह प्रकट होती है। उसने मसीह में शक्ति प्रदर्शित की, पद 20 से 21।

उसने सभी चीजों को मसीह के पैरों के नीचे दबा दिया। और उसने मसीह को कलीसिया का मुखिया बना दिया। यह वही शक्ति है जो वास्तव में मृत शरीर में भरी गई थी।

जब मसीह की मृत्यु हुई, तो पौलुस उन्हें यह बताने की कोशिश कर रहा था कि यह वही शक्ति थी जिसने उसके मृत शरीर में काम किया और उसे फिर से जीवित किया। यह परमेश्वर की शक्ति की असाधारण महानता है। और यह वह शक्ति है जिसने न केवल मसीह को मृतकों में से जीवित किया, बल्कि यह वह शक्ति भी है जिसने उसे ऊंचा किया और उसे ऊपर चढ़ने की क्षमता दी।

वाह! वाह! वह प्रार्थना करता है कि वे इस शक्ति के बारे में जानें।

इससे पहले कि मैं इस बारे में और बात करूँ कि इफिसियों के अगले अध्याय में मसीह के इस चित्रण और उनके उत्थान में यह शक्ति क्या करने जा रही है, मुझे उत्थान पर थोड़ा और टिप्पणी करने दें। जब हम मसीह के उत्थान के बारे में बात करते हैं, तो पॉल बताते हैं कि वह परमेश्वर के दाहिने हाथ, अधिकार के दाहिने हाथ पर बैठा है। इन व्याख्यानों के दौरान, मैं आपको समझाता

हूँ, आज भी, अफ्रीका जैसी जगहों पर, सर्वोच्च प्रमुख के बाद दूसरा कमांडर उसके दाहिने हाथ पर कैसे बैठा है।

दाहिना हाथ शक्ति और अधिकार का स्थान है। दाहिना हाथ अधिकार का प्रतीक है। यीशु स्वर्गीय क्षेत्रों में, आध्यात्मिक क्षेत्रों में, अदृश्य दुनिया में परमेश्वर के दाहिने हाथ में बैठा है।

वह हर दुष्ट कल्पनीय आध्यात्मिक शक्ति से ऊपर है। और केवल इतना ही नहीं, जो लोग जादू का उपयोग करते हैं और जादुई नामों में रुचि रखते हैं, उनके लिए मसीह हर उस नाम से ऊपर है जिसे स्वर्ग या पृथ्वी पर या नीचे नाम दिया जा सकता है। वह उन सभी से ऊपर है।

दूसरे शब्दों में कहें तो, उसके पास उन सभी पर अधिकार है। और मानो यह अधिकार अस्थायी है। अरे नहीं।

पॉल बताते हैं कि यह शक्ति और इस शक्ति का प्रदर्शन केवल इस युग के लिए ही नहीं बल्कि आने वाले युग के लिए भी है। पॉल, पॉल प्रार्थना के संदर्भ में इस विशेष परीक्षा को चुनेंगे। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता है, वह इस बात का संकेत देता है कि वह अध्याय दो में क्या करने जा रहा है।

वह वास्तव में यह दिखाने जा रहा है कि मसीह शारीरिक रूप से मर गया। विश्वासी वास्तव में अपने अपराधों और पापों में आध्यात्मिक रूप से मरे हुए हैं। परमेश्वर की शक्ति, महान शक्ति ने मरे हुए मसीह को प्रेरित किया, उसे जीवन दिया, और उसे महिमा दी।

जो विश्वासी पाप और अपराधों में मरे हुए हैं, परमेश्वर की कृपा से, परमेश्वर वास्तव में उन्हें अपनी कृपा से बचाएगा और उन्हें ऊपर उठाएगा और मसीह के साथ ऊंचे स्थानों पर बैठाएगा। और वे अपने बड़े भाई के साथ होंगे। मैं बड़े भाई को यीशु कहता हूँ।

वे स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ होंगे। दूसरे शब्दों में, मसीह में काम करने वाली शक्ति मसीह में विश्वासियों के लिए उपलब्ध शक्ति है। इसी कारण से, जब वह प्रार्थना करता है, तो वह आशा करता है और आशा करता है कि यह कलीसिया ऐसी कलीसिया नहीं होगी जो किसी भी तरह से इस डर में फंस जाएगी कि दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियाँ क्या कर सकती हैं।

लेकिन यह एक ऐसा चर्च होगा जो इस बात के ज्ञान से भरा होगा कि परमेश्वर क्या करने में सक्षम है और परमेश्वर ने क्या किया है। एक ऐसा चर्च होगा जो प्रकाश से भरा होगा, पवित्र आत्मा द्वारा प्रबुद्ध होगा, और अंधकार से भरा नहीं होगा। क्योंकि परमेश्वर, जिसने उन्हें बुलाया है, वह परमेश्वर है जिसने उन्हें ये सभी संसाधन दिए हैं।

जब हम अध्याय दो पर पहुँचते हैं, तो आप देखेंगे कि प्रवचन कैसे आगे बढ़ेगा। लेकिन आइए हम यह सब एक तस्वीर में देखने की कोशिश करें: कलीसिया के लिए पौलुस की याचिका कैसे आगे बढ़ती है। आप देखेंगे कि पद 16a से पद 23 तक, पौलुस वास्तव में प्रकाश और ज्ञान के लिए प्रार्थना करना शुरू कर देता है।

जब उसने प्रकाश के लिए प्रार्थना की, तो उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर कलीसिया को ज्ञान और बुद्धि की आत्मा दे ताकि वह उसे जान सके। उसने प्रकाश के लिए प्रार्थना करते हुए यह भी प्रार्थना की कि परमेश्वर वास्तव में उनके हृदय की आँखें खोल दे ताकि वे अंधकार में न डूब जाएँ। और फिर, दूसरे भाग में, ज्ञान के लिए प्रार्थना करते हुए, उसने प्रार्थना की कि वे जान सकें, वे मसीह द्वारा दिए गए बुलावे की आशा को जान सकें।

वह प्रार्थना करता है कि वे उसके धन, उसके सम्मान की सम्पदा, संतों में उसकी महिमामय विरासत को जान सकें। और अब वह प्रार्थना करता है कि वे उसकी शक्ति की महानता को जान सकें। वाह।

आप देखिए, कार्यकुशलता चर्च को शुरू से ही तैयार करती है ताकि अगर वे डर से ग्रसित हों, तो वे आराम कर सकें। पॉल अध्याय दो, अध्याय तीन और फिर अध्याय चार में जाने के लिए एक मंच तैयार करेगा, वह उन्हें नैतिक जिम्मेदारी के लिए बुला सकता है, अध्याय एक को समाप्त करते हुए। मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि पॉल यहाँ क्या कर रहा है।

चर्च का अभिवादन करने के बाद, उन्होंने जो कहा, उसे मैं एक बेदम प्रार्थना कहता हूँ। धन्य है परमेश्वर, जिसने हमें हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से नवाजा है, क्योंकि उसने हमें चुना है। उसने हमें छोड़ा है।

उसने हमें मुहरबंद कर दिया। और जब हम यह सब खत्म कर लेंगे, तो अब वह लिखने के लिए अपना समय लेगा। और फिर उसने रुककर कहा, जब से मैंने प्रभु यीशु में तुम्हारे विश्वास और संतों के प्रति तुम्हारे प्रेम के बारे में सुना है, तब से मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना करना बंद नहीं किया है।

लेकिन अगर वे निश्चित नहीं हैं, तो वह उन्हें बताता है कि वह उनके लिए किस बारे में प्रार्थना कर रहा है। हाँ, वह प्रार्थना कर रहा है कि वे प्रकाशित हों। उन्हें प्रकाश मिले, और उन्हें ज्ञान मिले।

यहाँ क्या हो रहा है, इस पर ध्यान दें। उनकी प्रार्थना सीधे तौर पर इस बात को संबोधित करती है कि परमेश्वर उनके सोचने के तरीके में किस तरह से बदलाव लाता है और यह उनके बाकी ईसाई जीवन को कैसे प्रभावित करता है। लचीलापन सिर्फ़ इस बात पर निर्भर नहीं करता कि मैं कैसा महसूस करता हूँ।

मैं कैसा महसूस करता हूँ, यह महत्वपूर्ण है। वास्तव में, पॉल उन पहले लोगों में से एक है जिन्होंने इस बारे में बात की कि मैं कैसा महसूस करता हूँ, जब उन्होंने फिलिप्पियों में कहा, उदाहरण के लिए, आनन्दित रहो। और फिर से, मैं कहता हूँ आनन्दित रहो।

लेकिन यह भी सच है कि पॉल इस बात पर अडिग है कि मसीह में जो ज्ञान किसी के पास है, वह इस बात को बहुत हद तक प्रभावित करता है कि वे मसीहियों के रूप में अपना जीवन कैसे जीते हैं। चाहे वह कैसा महसूस करता है, वह अंधकार या प्रकाश से कैसे भरा हुआ है, वह ईसाई समुदाय में खुद को कैसे संचालित करता है, या वह व्यापक समाज में खुद को कैसे संचालित करता है। ज्ञान महत्वपूर्ण है।

लेकिन उसने उन्हें इस तरह नहीं रखा जैसे कि बहुत सारी किताबें पढ़कर ज्ञान प्राप्त किया जाता है। लेकिन यह ज्ञान है जो मसीह को जानने की कोशिश करने और ऐसा करने के लिए आपको सक्षम बनाने के लिए पवित्र आत्मा के दिव्य सशक्तिकरण को प्राप्त करने से प्राप्त होता है। यह प्रार्थना करने के बाद, पौलुस ने प्रार्थना के लिए समाप्त किया कि वे परमेश्वर की शक्ति की असाधारण महानता को समझ सकें, वह शक्ति जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया।

मैं इस सत्र का समापन आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करके करूँगा कि पौलुस वास्तव में अध्याय दो की शुरुआत कैसे करेगा ताकि जब हम वापस आएँ, तो हम अध्याय दो को ध्यान से देखना बंद कर दें। वह अध्याय दो को इस तरह से शुरू करेगा। और आप, बहुवचन, आप उन अपराधों और पापों में मरे हुए थे जिनमें आप एक बार चले थे, इस दुनिया के मार्ग का अनुसरण करते हुए, हवा की शक्ति के राजकुमार का अनुसरण करते हुए, वह आत्मा जो अब अवज्ञा के अर्थ में काम कर रही है, जिसके बीच हम सभी एक बार अपने शरीर की वासनाओं में जीते थे, शरीर और मन की इच्छाओं को पूरा करते थे, और बाकी मानव जाति की तरह स्वभाव से क्रोध के बच्चे थे।

परन्तु परमेश्वर ने जो अपनी बड़ी दया का धनी है, उस बड़े प्रेम के कारण, जो उस ने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया। अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है। और हमें मसीह यीशु में उसके साथ जिलाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है, और न कर्मों का फल है, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

क्योंकि हम उसकी रचना हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से तैयार किया कि हम उनमें चलें। वाह। अनुग्रह से, हम बचाए गए हैं।

और यही हुआ। जब हम वापस आकर इस बारे में बात करेंगे, तो आप देखेंगे कि हम जो मर चुके थे, हम जो बेजान थे, दूसरे शब्दों में, अपने पापों और अपराधों के कारण जीवन के सच्चे सार का पूरा लाभ नहीं उठा पाए, मसीह में काम करने वाली महान शक्ति, वास्तव में, मसीह में काम करने वाली परमेश्वर की शक्ति की असाधारण महानता, हमारा हिस्सा होगी। और यह हमें, परमेश्वर की कृपा के माध्यम से, जीवित होने और मसीह के साथ बैठने में सक्षम बनाएगी।

लेकिन हमें इसका घमंड नहीं करना चाहिए। हमें यह समझना चाहिए कि अनुग्रह से ही हमारा उद्धार हुआ है। इस विचार को अपने मन में रखें कि अनुग्रह से ही हमारा उद्धार हुआ है।

और शायद आपको परमेश्वर के अनुग्रह के लिए धन्यवाद देने का एक कारण मिल जाए क्योंकि जब हम वापस आएंगे, तो आप परमेश्वर के अनुग्रह की समृद्धि को समझेंगे, जो आपके और मेरे जैसे पापियों को बचाता है। फिर से, हमारे साथ अध्ययन करने के लिए धन्यवाद। और मुझे आशा है कि आप इन अध्ययनों को उपयोगी पा रहे हैं।

और मैं यह भी आशा करता हूँ कि व्याख्यानो का पालन करने के बाद भी, आप अपनी बाइबल उठाने, इस परीक्षण को पढ़ने, अन्वेषण करने के लिए समय निकालेंगे क्योंकि ये व्याख्यान अभी शुरू ही हुए हैं। अब जब आपके पास यह जानकारी है तो आप सभी प्रकार की चीजों से अवगत होंगे क्योंकि आप परीक्षण को देखते हैं। और मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर आपको उसे जानने में मदद करे और मसीह में काम करने वाली इस शक्ति की महानता को जानने में मदद करे और मसीह में विश्वासियों के रूप में हमारे लिए उपलब्ध हो।

भगवान आपका भला करे। और मैं आपके साथ ये अध्ययन जारी रखने के लिए उत्सुक हूँ। धन्यवाद।

यह डॉ. डैन डार्को द्वारा जेल पत्रों पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 21 है, एक वफादार चर्च के लिए प्रार्थना, इफिसियों 1:15-23।